

दरबारीलाल कोठिया अभिनंदन ग्रंथ (फोल्डर नं. ०१२०२०)

मुख्य टाइटल

प्रकाशकीय

सम्पादकीय

विषयानुक्रम

प्रथम खंड – आशीर्वाद, शुभकामना एवं संस्मरण

शुभाशीर्वाद -----	१
एकलब्धप्रतिष्ठ विद्वान् -----	३
जैन दर्शनके प्रमुख विद्वान् -----	३
सेवाएँ अनुपम -----	३
साहित्य-साधनाके लिए समर्पित-जीवन -----	३
जैन विद्याके अप्रतिम-मनीषी -----	४
जैनधर्मके मूर्धन्य विद्वान् -----	४
धर्मानुरागी साहित्यसेवी -----	४
मंगल-कामना -----	५
सेवाएँ बहुमूल्य -----	५
सच्चा मार्गदर्शन -----	५
जैन न्यायके अधिकारी विद्वान् -----	५
दिग्गज विद्वान् -----	६
एक सामाजिक कार्यकर्ता -----	६
विलक्षण प्रतिभाशाली -----	६
जैन समाजके गौरव -----	६
हार्दिक शुभकामना -----	६
मंगल-कामना -----	७
देशके मूर्धन्य विद्वान् -----	७
जैनदर्शनके प्रकांड विद्वान् -----	७
उच्चकोटिके विद्वान् -----	७
जैन न्यायके अधिकारी विद्वान् -----	८
तत्त्वज्ञानके भण्डारी -----	८
ज्ञानका अखण्ड दीप जलाया -----	८
महामनीषी -----	८
श्रीकोठियाजीका नैतिक कोण -----	९
स्मृतिके झरोखे में कोठियाजी -----	९
सरस्वतीपुत्र -----	१०

कर्मठ व्यक्तित्व-----	११
हार्दिक सन्देश-----	११
समाजके मार्गदर्शक-----	११
प्रथम झलक-----	१२
न्यायदिवाकर डॉ. कोठियाजी-----	१२
महान् व्यक्तित्वके धनी-----	१३
सादगी और सरलताकी मूर्ति-----	१३
प्रेरणास्रोत-----	१३
ज्ञाननिधि एवं वात्सल्यकोश-----	१४
प्रेरक व्यक्तित्व-----	१५
देर आयद दुरस्त आमद-----	१५
गुरुणां गुरुवासरः-----	१६
विनम्रता और सरलताके अग्रणी-----	१६
यशस्करी विद्याके अमर उपासक-----	१६
कितने गहरे कितने उदार-----	१७
साहित्य-देवताके गरिमायुक्त आराधक-----	१८
मेरे श्रद्धेय-----	१८
एक सहृदय विद्वान्-----	१९
नई पीढीके निर्माता-----	२०
सरलताकी प्रतिमूर्ति-----	२०
जीवन-पथ प्रदर्शक-----	२०
भूली विसरी यादें-----	२१
योगदान उच्चस्तरका-----	२२
शुभकामना-----	२२
चतुर्मुखी प्रतिभाके धनी-----	२२
न्यायशास्त्र-मर्मज्ञ-----	२२
श्री दरबारीलाल कोठिया अभिनन्दन है बारंबार-----	२३
शत शत अभिनन्दन है-----	२४
नैनागिरिके श्रमणदूत-----	२४
ओ साहित्यिक सन्त-----	२५
अभिनन्दन कर हर्ष महान्-----	२६
नाव लगाना पार-----	२७
समता ममताके अनुरंजन कोठिया-----	२७
कोठी वाले कोठिया-----	२८
एक निस्पृह विद्वान्-----	२८

आदर्श व्यक्तित्वके धनी -----	२९
शत्-शत् वन्दन-----	२९
समय शिल्पी आदर्श साधक-----	२९
चतुर्मुखी प्रतिभाके धनी -----	३०
सराहनीय व्यक्तित्व -----	३१
संकल्पकी साकार मूर्ति-----	३१
व्यक्तित्वके धनी -----	३१
समर्पित विद्वान्-----	३१
क्षमा और और मार्दवके धनी-----	३२
मेरे पूज्य चाचा डॉ. कोठियाजी -----	३२
कष्टहरण पण्डितजी -----	३२
भावुक गुरुजी-----	३२
गुण-पारखी विद्वान्-----	३३
द्रोणगिरिके उत्सवोमें डॉ. कोठिया -----	३४
जैसा मैंने उन्हें जाना और पाया-----	३५
न्यायाचार्योमें अन्तिम कड़ी श्रीकोठियाजी -----	३६
वे न्यायाचार्य तो है ही, न्यायाधीश भी हैं – एक रोचक संस्मरण -----	३६
एक जागरुक व्यक्तित्व -----	३७
निर्लोभी डॉ. कोठियाजी -----	३७
युगपुरुषके प्रति-----	३८
प्रेरणा और स्फूर्तिके स्रोत -----	३९
उनका आदर्श मेरा प्रेरणास्रोत -----	४०
विद्वद् विभूति-----	४०
जैनदर्शनके अप्रतिम विद्वान् -----	४०
पण्डितजीके अनुरूपही पंडितानीजी -----	४१
डॉ. कोठिया पूर्ण पुरुषायुष प्राप्त करें -----	४२
छात्रोंके प्रति उदारभाव -----	४२
विद्वत्ताका सही उपयोग -----	४२
द्वितीय खण्ड – व्यक्तित्व एवं कृतित्व	
कुलदीपक कोठियाजी -----	४३
नीर-क्षीरके समीकरणमें निर्भय श्वेत मराल-----	४८
गोलापूर्व अन्वयके आलोकमें -----	४९
विद्वत्जगतके चमकते हुए सितार -----	५३
मेरी आन्तरिक सद्भावना -----	५५
जैन न्यायके एकमात्र सर्वोपरि विद्वान्-----	५६

जैनदर्शनके वरिष्ठ विद्वान्-----	५६
अप्रतिम प्रतिभाके धनी-----	५७
जैनदर्शन, न्यायके प्रकाण्ड विद्वान्-----	५८
चतुर्थ सक्रम एवं पूर्ण जैन न्यायाचार्य-----	५९
अलौकिक प्रतिभाके धनी-----	६०
जीवन मूल्योंके प्रति आस्थावान्-----	६१
समन्वयशील दार्शनिक विद्वान्-----	६२
जैनदर्शनके मूर्धन्य विद्वान्-----	६३
एक बहुरंगी व्यक्तित्व-----	६४
मंगलाशा-----	६८
मंगलकामना-----	६८
आस्थाका अभिनन्दन-----	६९
मंगल कामना-----	७०
वे जैन जगतके गौरव हैं-----	७१
अद्वितीय प्रतिभाके धनी-----	७२
बड़े भाई कोठियाजी-----	७२
अनुपम विद्वान्-----	७३
मेरे आद्य विद्यागुरु-----	७४
बहु आयामी व्यक्तित्वके धनी-----	७६
साहित्यिक शोधक्षेत्रमें महनीय योगदान-----	७७
सरल एवं स्नेही विद्वान्-----	७७
मूर्धन्य विद्वान् कोठियाजी-----	७८
जैन न्यायके अद्वितीय प्रकाण्ड पण्डित-----	७९
मेरी पहली मुलाकात-----	७९
उनका जीवन-एक खुली पुस्तक-----	८०
डॉ. साहबके सम्पर्कमें कैसे आया-----	८१
मेरे श्रद्धा-भजन-----	८३
उनकी मुझपर गहरी छाप-----	८६
निस्पृह साहित्य-समाजसेवक-----	८६
विनम्रताकी साकार प्रतिमूर्ति-----	८७
युगप्रणेता डॉ. कोठिया-----	८७
मेरी दृष्टिमें हमारे श्रीमान्जी-----	८९
जैनदर्शन और प्रमाणशास्त्र परीशीलन – समीक्षात्मक अध्ययन-----	९१
प्रमाण-परिक्षा-----	९४
जैन तर्कशास्त्रमें अनुमान-विचार (एक समीक्षण)-----	९५

प्रमाणप्रमेयकलिकाके संदर्भमें-----	१०५
न्यायदीपिका-एक समीक्षा-----	१०८
द्रव्यसंग्रह-एक अनुशीलन-----	११५
आप्त-परीक्षा – एक अध्ययन-----	११७
समाधिमरणोत्साहदीपक-एक समीक्षा-----	१२०
तृतीय खण्ड – धर्म, दर्शन, न्याय	
धर्म	
पुण्य और पापका शास्त्रीय दृष्टिकोण-----	१२३
वर्तनाका अर्थ-----	१२८
जीवनमें संयमका महत्त्व-----	१३३
चरित्र का महत्त्व-----	१३८
करुणा जीवकी एक शुभ परिणति-----	१४०
जैन धर्म और दीक्षा-----	१४३
धर्म-एक चिन्तन-----	१४६
सम्यक्त्वका अमूढदृष्टि अंग-एक महत्त्वपूर्ण परीक्षण-सिद्धान्त-----	१४८
महावीरकी धर्म-देशना-----	१५०
वीर-शासन और उसका महत्त्व-----	१५५
महावीरका आध्यात्मिक मार्ग-----	१६१
महावीरका आचार धर्म-----	१६४
भगवान महावीरकी क्षमा और अहिंसाका एक विश्लेषण-----	१७०
भगवान महावीर और हमारा कर्त्व्य-----	१७३
दर्शन	
अनेकान्तवाद-विमर्श-----	१७७
स्याद्वाद-विमर्श-----	१८२
संजय वेलट्ठिपुत्त और स्याद्वाद-----	१८५
जैन दर्शनके समन्वयवादी दृष्टिकोणकी ग्राह्यता-----	१९३
श्रमण-संस्कृतिकी वैदिक संस्कृतिको देन-----	१९६
डॉ. अम्बेडकरसे भेटवार्तामें अनेकान्त-चर्चा-----	२००
जैन दर्शनमें सल्लेखना-एक अनुचिन्तन-----	२०३
जैन दर्शनमें सर्वज्ञता-----	२१७
अर्थाधिगम चिन्तन-----	२२५
ज्ञापकतत्त्व-विमर्श-----	२३०
ध्यान-विमर्श-----	२३४
न्याय	
भारतीय वाङ्मयमें अनुमान-विचार-----	२३९

न्याय-विद्यामृत -----	२८१
चतुर्थ खण्ड – इतिहास और साहित्य	
स्याद्वाद और वादीभसिंह -----	२८७
द्रव्यसंग्रह और नेमिचन्द्र सिद्धान्तिदेव -----	३१६
शासन-चतुस्त्रिंशिका और मदनकीर्ति -----	३४०
संजद पदके सम्बन्धमें अकलंकदेवका महत्त्वपूर्ण अभिमत-----	३६०
९३वें सूत्रमें संजद पदका सद्भाव -----	३६३
नियमसारका ५३ वी गाथा और उसकी व्याख्या एवं अर्थपर अनुचिन्तन -----	३७५
अनुसंधानमें पूर्वाग्रहमुक्ति आवश्यक-कुछ प्रश्न और समाधान -----	३७९
गुणचन्द्र मुनि कौन हैं -----	३९६
कौन सा कुण्डलगिरि सिद्धक्षेत्र है -----	३९८
गजपंथ तीर्थक्षेत्रका एक अतिप्राचीन उल्लेख-----	४०२
अनुसन्धानविषयक महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर -----	४०४
आचार्य कुन्दकुन्द-----	४११
आचार्य गृच्छपिच्छ -----	४१६
आचार्य समन्तभद्र -----	४१८
पंचम खण्ड – विविध	
विहारकी महान् देन-तीर्थकर महावीर और इन्द्रभूति -----	४२३
विद्वान् और समाज -----	४२८
हमारे सांस्कृतिक गौरवका प्रतीक-अहार-----	४३५
आचार्य शान्तिसागरजीका समाधिमरण -----	४४१
आदर्श तपस्वी आचार्य नमिसागर -----	४५१
पूज्य वर्णीजी-महत्त्वपूर्ण संस्मरण-----	४५५
प्रतिभामूर्ति पं. टोडरमल -----	४६०
श्रुतपञ्चमी -----	४६२
जम्बू जिनाष्टकम् -----	४६५
दशलक्षण पर्व -----	४६६
क्षमावाणी-क्षमापर्व -----	४६८
वीर-निर्वाणपर्व-दीपावली-----	४७०
महावीर-जयन्ती -----	४७४
श्रीपपोराजी-जिनमन्दिरोंका अद्भुत समुच्चय -----	४७६
पावापुर-----	४७८
श्रमणवेलगोला और गोम्मटेश्वरका महामस्तकाभिषिक्त -----	४८०
राजगृहकी मेरी यात्रा और अनुभव-----	४८३
काश्मीरकी मेरी यात्रा और अनुभव -----	४८७

बम्बई-प्रवास -----	४९०
परिशिष्ट -----	४९१
गुरुजीकी प्रवृत्तियाँ-----	४९५
डॉ. कोठिया-एक कुशल कार्यकर्ता-----	४९५
कर्तृत्व एवं व्यक्तित्व के धनी -----	४९६
जीवेत शरद-शतम् -----	४९६
सजग प्रहरी -----	४९७
डॉ. कोठियाकी अप्रतिम सेवाएँ-----	४९७
साधुमना श्री कोठियाजी-----	४९७
प्रगाढ़ विद्वत्ता और सौम्य व्यक्तित्वके धनी -----	४९७
गुरुदेवका आशीर्वाद -----	४९८
विनयकी जीवन्त मूर्ति-----	४९८
अनेकानेक मंगल-कामनाएँ -----	४९८
निश्चल एवं अध्ययनशील पण्डितजी -----	४९९
न्यायके असाधारण ज्ञाता -----	५००
मधुर व्यवहारके धनी -----	५००
मेरे फूफाजी -----	५००
कर्मयोगी कोठियाजी -----	५०१
कर्मठ विद्वान् -----	५०२
समाजके भूषण -----	५०२
जैन जगतकी अमूल्य निधि-----	५०२
उनका अविस्मरणीय योगदान -----	५०२